International Journal of Arts, Humanities and Social Studies

ISSN Print: 2664-8652
ISSN Online: 2664-8660
Impact Factor: RJIF 8.31
IJAHSS 2025; 7(2): 607-611
www.socialstudiesjournal.com
Received: 18-10-2025
Accepted: 21-11-2025

कुमारी स्वर्णलता
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
कुमारी स्वर्णलता
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में बिहार की महिला मतदाताओं की भागीदारी प्राथमिकताएं एवं प्रभाव

कुमारी स्वर्णलता

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26648652.2025.v7.i2h.358

सारांश:
बिहार में लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों के दौरान महिला मतदाताओं की भागीदारी में निरंतर वृद्धि देखी गई है। यह परिवर्तन न केवल लोकतांत्रिक प्रक्रिया की मजबूती का संकेत है, बल्कि राज्य की सामाजिक-आर्थिक संरचना में आ रहे सकारात्मक बदलावों को भी दर्शाता है। हाल के वर्षों में कई चुनावों में महिला मतदान प्रतिशत पुरुषों के बराबर अथवा कुछ क्षेत्रों में उससे अधिक रहा है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएँ अब राजनीतिक प्रक्रिया में अधिक सजग और सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।
महिला मतदाताओं की प्राथमिकताओं में शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, सामाजिक कल्याण योजनाएँ, रोजगार के अवसर, स्वच्छ पेयजल तथा बिजली जैसी बुनियादी सुविधाएँ प्रमुख हैं। बिहार सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा चलाई गई योजनाएँ- जैसे साइकिल योजना, छात्रवृत्ति, स्वयं सहायता समूह (जीविका), उज्ज्वला योजना तथा स्वास्थ्य बीमा- महिलाओं के राजनीतिक दृष्टिकोण को प्रभावित करती रही हैं। ये योजनाएँ महिलाओं के दैनिक जीवन से सीधे जुड़ी होने के कारण मतदान व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
महिला मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी का चुनावी परिणामों पर भी स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। कई निर्वाचन क्षेत्रों में महिलाओं के संगठित मतदान ने सत्ता परिवर्तन, उम्मीदवारों की जीत-हार तथा नीतिगत प्राथमिकताओं को प्रभावित किया है। राजनीतिक दल अब महिला मतदाताओं को एक निर्णायक वर्ग मानकर अपने घोषणापत्रों में महिला-केंद्रित मुद्दों को प्रमुखता से शामिल कर रहे हैं। इससे नीति-निर्माण में लैंगिक संवेदनशीलता बढ़ी है।
कुल मिलाकर, बिहार में महिला मतदाताओं की भागीदारी लोकतंत्र को अधिक समावेशी बना रही है। उनकी प्राथमिकताएँ विकासोन्मुखी और सामाजिक न्याय पर आधारित हैं, जिनका प्रभाव न केवल चुनावी राजनीति पर बल्कि शासन की दिशा और गुणवत्ता पर भी पड़ रहा है। भविष्य में महिला राजनीतिक जागरूकता के और सुदृढ़ होने से बिहार की लोकतांत्रिक प्रक्रिया और अधिक मजबूत होने की संभावना है।

कूट शब्द: विकासोन्मुखी, सामाजिक न्याय, राजनीतिक दल, स्वयं सहायता समूह, महिला मतदान, महिला-हितैषी योजनाएँ।

प्रस्तावाना
भारत का लोकतांत्रिक ढाँचा नागरिकों की सक्रिय भागीदारी पर आधारित है, जिसमें महिला मतदाताओं की भूमिका निरंतर सशक्त होती जा रही है। बिहार जैसे सामाजिक-आर्थिक रूप से विविध राज्य में लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में महिला मतदाताओं की भागीदारी न केवल संख्या की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि चुनावी प्राथमिकताओं और राजनीतिक परिणामों को प्रभावित करने की क्षमता भी रखती है। विगत कुछ दशकों में शिक्षा के प्रसार, राजनीतिक जागरूकता, आरक्षण नीतियों तथा सामाजिक आंदोलनों के प्रभाव से बिहार की महिलाओं में मतदान के प्रति रुचि और सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
बिहार में महिला मतदाता पारंपरिक रूप से परिवार, समुदाय और सामाजिक संरचनाओं से प्रभावित रही हैं, किंतु हाल के वर्षों में उनके मतदान व्यवहार में स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देता है। आज महिला मतदाता केवल पहचान-आधारित राजनीति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, सामाजिक न्याय, गरीबी उन्मूलन और बुनियादी सुविधाओं जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देने लगी हैं। लोकसभा चुनावों में राष्ट्रीय नीतियाँ, कल्याणकारी योजनाएँ और नेतृत्व की छवि महिला मतदाताओं को प्रभावित करती हैं, जबकि विधानसभा चुनावों में स्थानीय विकास, कानून-व्यवस्था, महिला-हितैषी योजनाएँ और राज्य सरकार की कार्यप्रणाली उनके निर्णय को दिशा देती है।
महिला मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी का चुनावी परिणामों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। कई निर्वाचन क्षेत्रों में महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरुषों से अधिक रहा है, जिससे राजनीतिक दलों की रणनीतियों में भी बदलाव आया है। राजनीतिक दल अब महिला-केंद्रित घोषणापत्र, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण योजनाएँ और सुरक्षा से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता देने लगे हैं।

इस प्रकार, बिहार में लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में महिला मतदाताओं की भागीदारी केवल लोकतांत्रिक समावेशन का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह राज्य की राजनीति की दिशा, नीतिगत प्राथमिकताओं और सत्ता संतुलन को प्रभावित करने वाला एक निर्णायक कारक बन चुकी है।

महिला मतदाता भागीदारी: ऐतिहासिक दृष्टि

भारत के लोकतांत्रिक ढाँचे में महिला मतदाताओं की भागीदारी समय के साथ निरंतर सशक्त होती गई है। बिहार जैसे सामाजिक-आर्थिक रूप से विविध राज्य में महिला मतदाता भागीदारी का ऐतिहासिक विकास न केवल लोकतंत्र की मजबूती को दर्शाता है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा, जागरूकता और राजनीतिक समावेशन की दिशा में हुए प्रयासों को भी रेखांकित करता है। लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में बिहार की महिलाओं की भूमिका प्रारंभिक दशकों में सीमित रही, किंतु समय के साथ यह स्थिति उल्लेखनीय रूप से बदली है।

स्वतंत्रता के बाद प्रारंभिक चुनावों (1952-1970) में बिहार में महिला मतदाताओं की भागीदारी अपेक्षाकृत कम थी। इसका प्रमुख कारण पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना, महिला शिक्षा का अभाव, राजनीतिक जागरूकता की कमी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक प्रतिबंध थे। उस समय अधिकांश महिलाएँ मतदान को पुरुषों का क्षेत्र मानती थीं और परिवार के पुरुष सदस्यों के निर्णय पर ही निर्भर रहती थीं। इसके बावजूद, संविधान द्वारा प्रदत्त समान मताधिकार ने महिलाओं को राजनीतिक प्रक्रिया में शामिल होने का कानूनी आधार अवश्य प्रदान किया। [1]

1970 और 1980 के दशक में सामाजिक-राजनीतिक चेतना में आंशिक वृद्धि दिखाई देती है। इस काल में महिला साक्षरता में धीरे-धीरे सुधार हुआ और विभिन्न सामाजिक आंदोलनों ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के लिए प्रेरित किया। बिहार में भूमि सुधार, सामाजिक न्याय और पिछड़े वर्गों के उत्थान से जुड़े आंदोलनों ने अप्रत्यक्ष रूप से महिला राजनीतिक सहभागिता को भी प्रभावित किया। हालांकि इस दौर में महिला मतदान प्रतिशत अभी भी पुरुषों की तुलना में कम रहा, परंतु प्रवृत्ति सकारात्मक दिशा में बढ़ने लगी।

1990 का दशक बिहार की महिला मतदाता भागीदारी के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जा सकता है। मंडल राजनीति, सामाजिक न्याय की राजनीति तथा पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण ने महिलाओं को राजनीतिक रूप से अधिक सजग बनाया। पंचायत स्तर पर नेतृत्व का अनुभव प्राप्त करने से महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ा, जिसका प्रभाव लोकसभा और विधानसभा चुनावों में उनके मतदान व्यवहार पर भी पड़ा। इस अवधि में महिला मतदाताओं की संख्या और मतदान प्रतिशत में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई।

21वीं सदी के आरंभ से बिहार में महिला मतदाता भागीदारी ने नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कीं। राज्य सरकार द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वयं सहायता समूहों, तथा महिला सशक्तिकरण से संबंधित योजनाओं ने महिलाओं को सामाजिक-आर्थिक रूप से अधिक सक्षम बनाया। "जीविका" जैसे कार्यक्रमों ने ग्रामीण महिलाओं को संगठित कर राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा और निर्णय-निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के अवसर दिए। इसके परिणामस्वरूप कई चुनावों में महिला मतदान प्रतिशत पुरुषों के बराबर या उससे अधिक तक पहुँच गया।

हाल के लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में यह स्पष्ट देखा गया है कि बिहार की महिला मतदाता केवल संख्या की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि राजनीतिक प्रभाव की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बन चुकी हैं। महिलाएँ अब केवल पारिवारिक या सामुदायिक दबाव में मतदान नहीं करतीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, रोजगार, सामाजिक सम्मान और कल्याणकारी योजनाओं जैसे मुद्दों के आधार पर अपने मत का प्रयोग करती हैं। यह परिवर्तन ऐतिहासिक रूप से महिला मतदाता चेतना के विकास का परिणाम है। [2]

इस प्रकार, बिहार में महिला मतदाता भागीदारी का ऐतिहासिक विकास एक क्रमिक लेकिन सशक्त परिवर्तन की कहानी है। प्रारंभिक उदासीनता से लेकर वर्तमान सक्रियता तक की यह यात्रा सामाजिक सुधार, राजनीतिक समावेशन और लोकतांत्रिक जागरूकता के संयुक्त प्रयासों का प्रतिफल है। भविष्य में यह अपेक्षा की जा सकती है कि बिहार की महिलाएँ न केवल मतदाता के रूप में, बल्कि नीति-निर्माण और नेतृत्व के स्तर पर भी और अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाएँगी।

भागीदारी में वृद्धि के कारण

बिहार में लोकतांत्रिक प्रक्रिया के सुदृढ़ीकरण में महिला मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी एक महत्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन के रूप में उभरी है। विगत दो दशकों में लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में महिलाओं की मतदान उपस्थिति में निरंतर वृद्धि देखी गई है। कई चुनावों में महिला मतदान प्रतिशत पुरुषों के बराबर अथवा उनसे अधिक भी रहा है। यह परिवर्तन केवल सांख्यिकीय नहीं है, बल्कि इसके पीछे सामाजिक चेतना, नीतिगत हस्तक्षेप और संस्थागत सुधारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

1. शिक्षा एवं जागरूकता में वृद्धि

महिला साक्षरता दर में सुधार महिला मतदाता भागीदारी बढ़ने का प्रमुख कारण है। शिक्षा ने महिलाओं में राजनीतिक समझ, अधिकारबोध और निर्णय-क्षमता को मजबूत किया है। स्वयं सहायता समूहों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, आशा कर्मियों और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा चलाए गए जागरूकता कार्यक्रमों ने महिलाओं को मतदान के महत्व से परिचित कराया। इससे महिलाओं में यह भावना प्रबल हुई कि उनका वोट शासन और नीतियों को प्रभावित कर सकता है। [3]

2. सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण

महिलाओं के लिए आरक्षित पंचायत व्यवस्था (33% से बढ़कर 50% आरक्षण) ने जमीनी स्तर पर नेतृत्व के अवसर दिए, जिसका सकारात्मक प्रभाव विधानसभा और लोकसभा चुनावों में भी पड़ा। स्वयं सहायता समूहों (जैसे जीविका) के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ी, जिससे महिलाओं का सार्वजनिक जीवन में आत्मविश्वास बढ़ा। आर्थिक स्वतंत्रता ने परिवार और समाज में उनकी निर्णय-सत्ता को मजबूत किया, परिणामस्वरूप वे स्वतंत्र रूप से मतदान करने लगीं।

3. चुनावी प्रशासन में सुधार और सुरक्षा

चुनाव आयोग द्वारा किए गए प्रशासनिक सुधार- जैसे महिला-मैत्री मतदान केंद्र, कतारों में प्राथमिकता, महिला कर्मियों की तैनाती और सुरक्षा व्यवस्था ने महिलाओं के लिए मतदान को सुरक्षित और सुविधाजनक बनाया। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षा का भरोसा बढ़ने से महिलाओं की उपस्थिति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। [4]

4. कल्याणकारी योजनाओं का प्रभाव

बिहार सरकार और केंद्र सरकार की कई योजनाएँ- जैसे छात्रवृत्ति, साइकिल योजना, पोशाक योजना, उज्ज्वला योजना, जन-धन, स्वच्छ भारत, स्वास्थ्य बीमा और सामाजिक सुरक्षा पेंशन सीधे महिलाओं के जीवन से जुड़ी रहीं। इन योजनाओं के लाभों ने महिलाओं को यह एहसास कराया कि राजनीतिक निर्णय उनके दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं। फलस्वरूप महिलाएँ मतदान को अपने हितों की रक्षा का माध्यम मानने लगीं। [5]

5. राजनीतिक दलों की रणनीतियाँ

राजनीतिक दलों ने महिला मतदाताओं को एक निर्णायक वोट बैंक के रूप में पहचानना शुरू किया। चुनावी घोषणापत्रों में महिला-केंद्रित मुद्दों- शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, रोजगार और सामाजिक सम्मान को प्रमुखता दी गई। महिला उम्मीदवारों की संख्या में (यद्यपि सीमित) वृद्धि और महिला नेताओं की सक्रिय भूमिका ने भी महिलाओं को मतदान के लिए प्रेरित किया। [7]

6. सामाजिक बदलाव और मीडिया की भूमिका

मीडिया, सोशल मीडिया और जनसंचार के साधनों ने महिलाओं को राजनीतिक विमर्श से जोड़ा। सफल महिला नेताओं और जनप्रतिनिधियों के उदाहरणों ने प्रेरणा

प्रदान की। साथ ही, परंपरागत पितृसत्तात्मक नियंत्रण में धीरे-धीरे कमी आई, जिससे महिलाएँ स्वतंत्र राजनीतिक अभिव्यक्ति करने लगीं। [8]

इस प्रकार बिहार में महिला मतदाता भागीदारी में वृद्धि बहुआयामी कारणों का परिणाम है- शिक्षा, सशक्तिकरण, प्रशासनिक सुधार, कल्याणकारी नीतियाँ और सामाजिक चेतना। यह प्रवृत्ति लोकतंत्र को अधिक समावेशी और उत्तरदायी बनाती है। भविष्य में यदि महिलाओं की भागीदारी को नीति-निर्माण और प्रतिनिधित्व में भी समान रूप से बढ़ाया जाए, तो यह बिहार की लोकतांत्रिक व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करेगी।

महिला मतदाताओं की प्राथमिकताएँ

परंपरागत रूप से राजनीतिक रूप से कम सक्रिय मानी जाने वाली महिलाएँ अब न केवल मतदान कर रही हैं, बल्कि अपने सामाजिक-आर्थिक हितों के आधार पर प्राथमिकताएँ तय कर राजनीतिक परिणामों को भी प्रभावित कर रही हैं। यह बदलाव शिक्षा, जागरूकता अभियानों, कल्याणकारी योजनाओं तथा सामाजिक आंदोलनों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम है।

सबसे पहली और प्रमुख प्राथमिकता सामाजिक सुरक्षा एवं कल्याण से जुड़ी है। बिहार की महिला मतदाता उन राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों को प्राथमिकता देती हैं जो महिलाओं के लिए प्रत्यक्ष लाभकारी योजनाएँ लागू करते हैं। इसमें उज्ज्वला योजना के अंतर्गत गैस कनेक्शन, पोषण एवं मातृत्व लाभ योजनाएँ, विधवा एवं वृद्धावस्था पेंशन, तथा स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक सहायता प्रमुख हैं। इन योजनाओं ने महिलाओं के दैनिक जीवन को प्रभावित किया है, इसलिए मतदान निर्णय में इनकी भूमिका निर्णायक हो जाती है। [9]

दूसरी महत्वपूर्ण प्राथमिकता शिक्षा और स्वास्थ्य है। महिला मतदाता विशेषकर बालिका शिक्षा, छात्रवृत्ति, साइकिल व पोशाक योजना तथा स्कूलों में सुविधाओं की उपलब्धता को गंभीरता से देखती हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की सुलभता, मातृ-शिशु स्वास्थ्य सेवाएँ, टीकाकरण और प्रसव सुविधाएँ उनकी राजनीतिक पसंद को प्रभावित करती हैं। जिन दलों ने इन क्षेत्रों में ठोस कार्य किए हैं, उन्हें महिलाओं का अपेक्षाकृत अधिक समर्थन मिलता है।

तीसरी प्राथमिकता रोजगार एवं आर्थिक सशक्तिकरण से संबंधित है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों की महिलाएँ अब केवल गृहिणी की भूमिका तक सीमित नहीं रहना चाहतीं। वे स्वरोजगार, स्वयं सहायता समूहों, सूक्ष्म ऋण, कौशल विकास और स्थानीय रोजगार के अवसरों को महत्व देती हैं। विशेष रूप से जीविका जैसे कार्यक्रमों ने महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ाया है, जिससे वे मतदान के समय आर्थिक नीतियों और रोजगार सृजन के वादों पर ध्यान देती हैं। [10]

चौथी प्राथमिकता सुरक्षा, सम्मान और कानून-व्यवस्था है। महिलाओं के विरुद्ध अपराध, घरेलू हिंसा, छेड़छाड़ और सार्वजनिक स्थानों पर असुरक्षा जैसे मुद्दे महिला मतदाताओं के लिए अत्यंत संवेदनशील हैं। वे उन राजनीतिक दलों को प्राथमिकता देती हैं जो सख्त कानून-व्यवस्था, त्वरित न्याय और महिला सुरक्षा से जुड़े ठोस उपायों का वादा करते हैं। महिला पुलिस बल की तैनाती, हेल्पलाइन और फास्ट-ट्रैक अदालतें ऐसे कदम हैं जो महिला मतदाताओं के भरोसे को मजबूत करते हैं।

पाँचवीं प्राथमिकता राजनीतिक प्रतिनिधित्व और भागीदारी है। पंचायत स्तर पर आरक्षण और स्थानीय शासन में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने उन्हें राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक बनाया है। महिला मतदाता अब केवल मत देने तक सीमित नहीं रहना चाहतीं, बल्कि वे चाहती हैं कि विधानसभाओं और संसद में भी उनकी आवाज़ मजबूत हो। इसलिए महिला प्रत्याशियों या महिला हितैषी नीतियों वाले दलों को समर्थन मिलने की प्रवृत्ति बढ़ी है। [11]

इन प्राथमिकताओं का चुनावी प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बिहार में कई चुनावी क्षेत्रों में महिला मतदाताओं का मतदान प्रतिशत पुरुषों के बराबर या उससे अधिक रहा है। इससे राजनीतिक दलों की रणनीतियों में बदलाव आया है और वे अपने घोषणापत्रों में महिलाओं से जुड़े मुद्दों को विशेष स्थान देने लगे हैं। लोकसभा और विधानसभा चुनावों में महिला मतदाताओं की सक्रियता ने सत्ता परिवर्तन, गठबंधन राजनीति और नीति-निर्माण की दिशा को प्रभावित किया है। [12]

इस प्रकार बिहार में महिला मतदाताओं की प्राथमिकताएँ केवल भावनात्मक नहीं बल्कि व्यावहारिक और मुद्दा-आधारित हैं। सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा-स्वास्थ्य, रोजगार, सुरक्षा और राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे मुद्दों पर आधारित उनका मतदान व्यवहार लोकतंत्र को अधिक समावेशी बना रहा है। भविष्य में यदि इन प्राथमिकताओं को नीति-निर्माण में गंभीरता से शामिल किया गया, तो बिहार की राजनीति में महिला मतदाताओं की भूमिका और भी निर्णायक होती जाएगी।

राजनीतिक रणनीतियाँ और महिलाओं का लक्ष्य

बिहार में लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों के दौरान महिला मतदाताओं की भागीदारी में पिछले कुछ दशकों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। पहले जहाँ महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता सीमित मानी जाती थी, वहीं अब वे न केवल मतदान में सक्रिय हैं बल्कि चुनावी परिणामों को प्रभावित करने वाली एक सशक्त शक्ति के रूप में उभर रही हैं। कई चुनावों में महिला मतदान प्रतिशत पुरुषों के बराबर अथवा उनसे अधिक दर्ज किया गया है, जो लोकतांत्रिक चेतना के विस्तार का संकेत है। [13]

महिला मतदाताओं की प्राथमिकताओं में सामाजिक-आर्थिक मुद्दों को विशेष महत्व प्राप्त है। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, महिलाओं की सुरक्षा, रोजगार, स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक सशक्तीकरण, तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली जैसे विषय उनके मतदान निर्णय को प्रभावित करते हैं। बिहार सरकार द्वारा लागू योजनाएँ- जैसे साइकिल योजना, पोशाक योजना, आरक्षण व्यवस्था और महिला सशक्तीकरण से जुड़ी नीतियाँ- महिला मतदाताओं के बीच सकारात्मक प्रभाव डालती रही हैं। इसके अतिरिक्त, स्थानीय स्तर पर शराबबंदी जैसे निर्णयों ने भी महिला मतदाताओं को राजनीतिक रूप से संगठित किया है। [14]

राजनीतिक दलों ने महिला मतदाताओं के बढ़ते महत्व को समझते हुए अपनी रणनीतियों में परिवर्तन किया है। चुनावी घोषणापत्रों में महिलाओं के लिए विशेष योजनाएँ, महिला उम्मीदवारों को टिकट देना, महिला-केंद्रित प्रचार अभियान और महिला नेताओं की सक्रिय भागीदारी अब सामान्य रणनीति बन चुकी है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के माध्यम से संवाद स्थापित करना भी दलों की प्रमुख रणनीति है।

समग्र रूप से, बिहार की महिला मतदाता केवल संख्या तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे राजनीतिक प्राथमिकताओं को दिशा देने वाली निर्णायक शक्ति बन चुकी हैं। उनकी भागीदारी ने लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाया है और भविष्य में भी चुनावी राजनीति को प्रभावित करने में उनकी भूमिका और सुदृढ़ होने की संभावना है। [15]

महिला मतदाता भागीदारी का चुनाव परिणामों पर प्रभाव

बिहार की लोकतांत्रिक राजनीति में महिला मतदाताओं की भूमिका पिछले दो दशकों में उल्लेखनीय रूप से सशक्त हुई है। परंपरागत रूप से पुरुष-प्रधान माने जाने वाले चुनावी व्यवहार में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने न केवल मतदान प्रतिशत को बढ़ाया है, बल्कि चुनावी मुद्दों, राजनीतिक प्राथमिकताओं और परिणामों को भी प्रभावित किया है। लोकसभा एवं विधानसभा- दोनों स्तरों पर महिला मतदाताओं की सक्रियता अब निर्णायक कारक के रूप में उभर रही है।

बिहार में महिला मतदाता भागीदारी में वृद्धि के पीछे कई कारण हैं। सबसे पहले, शिक्षा का प्रसार और साक्षरता दर में सुधार ने महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाई है। दूसरा, स्वयं सहायता समूहों (SHG), जीविका जैसी योजनाओं और पंचायत स्तर पर आरक्षण ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन से जोड़ा है। तीसरा, चुनाव आयोग द्वारा महिला मतदाताओं के लिए सुविधाएँ- जैसे अलग कतारें, महिला-प्रबंधित मतदान केंद्र और सुरक्षा व्यवस्था- ने मतदान को सहज बनाया है। परिणामस्वरूप, कई चुनावों में महिला मतदान प्रतिशत पुरुषों के बराबर या उससे अधिक दर्ज किया गया है। [16]

महिला मतदाताओं की प्राथमिकताएँ प्रायः विकास और सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी होती हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, स्वच्छता, बिजली, सड़क, आंगनवाड़ी, पोषण, महिला सुरक्षा और सामाजिक कल्याण योजनाएँ उनके मतदान निर्णयों को प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त, शराबबंदी, घरेलू हिंसा पर नियंत्रण, रोजगार के अवसर और महंगाई जैसे मुद्दे भी महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण हैं। लोकसभा चुनावों में जहाँ राष्ट्रीय नीतियाँ और नेतृत्व का प्रभाव दिखता है, वहीं विधानसभा चुनावों में स्थानीय विकास, कानून-व्यवस्था और राज्य-स्तरीय कल्याण योजनाएँ महिला मतदाताओं के निर्णय में प्रमुख भूमिका निभाती हैं।

महिला मतदाता भागीदारी का चुनाव परिणामों पर प्रभाव स्पष्ट है। जिन दलों और प्रत्याशियों ने महिलाओं से जुड़े मुद्दों को अपने घोषणापत्र और अभियान में प्राथमिकता दी, उन्हें अपेक्षाकृत अधिक समर्थन मिला।[15] बिहार में कल्याणकारी योजनाओं- जैसे छात्रवृत्ति, साइकिल योजना, पोशाक योजना, उज्ज्वला और आवास योजनाएँ ने महिला मतदाताओं को प्रभावित किया है और कई क्षेत्रों में मतदान रुझानों को निर्णायक रूप से बदला है। ग्रामीण क्षेत्रों में संगठित महिला समूहों के सामूहिक मतदान व्यवहार ने कई सीटों पर परिणामों की दिशा तय की है। इसके साथ ही, महिला मतदाताओं की बढ़ती स्वतंत्रता- परिवार या समुदाय के दबाव से अलग होकर मतदान करने की प्रवृत्ति ने पारंपरिक जाति-आधारित राजनीति को चुनौती दी है। यह बदलाव लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाता है और शासन को जवाबदेह बनाता है। [14]

इस प्रकार बिहार के लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में महिला मतदाताओं की भागीदारी केवल संख्यात्मक वृद्धि नहीं, बल्कि गुणात्मक परिवर्तन का संकेत है। उनकी प्राथमिकताएँ विकासोन्मुख और सामाजिक न्याय आधारित हैं, जिनका सीधा प्रभाव चुनावी परिणामों पर पड़ता है। भविष्य में यदि राजनीतिक दल महिला-केंद्रित नीतियों को गंभीरता से अपनाते हैं, तो बिहार की राजनीति अधिक संतुलित, संवेदनशील और विकासशील दिशा में अग्रसर होगी।

महिला मतदाता वोटिंग व्यवहार के विश्लेषण

बिहार में लोकतांत्रिक प्रक्रिया को सशक्त बनाने में महिला मतदाताओं की भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में महिलाओं की भागीदारी न केवल संख्यात्मक रूप से बढ़ी है, बल्कि उनके वोटिंग व्यवहार में भी परिपक्वता, स्वतंत्रता और मुद्दा-आधारित दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह परिवर्तन सामाजिक जागरूकता, शिक्षा के प्रसार, सरकारी योजनाओं और महिला सशक्तीकरण से जुड़े प्रयासों का परिणाम है। [16]

पिछले कुछ दशकों में बिहार में महिला मतदाता प्रतिशत में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कई चुनावों में महिला मतदान प्रतिशत पुरुषों के बराबर या उससे अधिक भी रहा है। यह तथ्य दर्शाता है कि महिलाएँ अब केवल पारंपरिक सामाजिक दबावों के तहत मतदान नहीं कर रहीं, बल्कि अपने अधिकारों और मत के महत्व को समझते हुए सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। लोकसभा चुनावों में राष्ट्रीय मुद्दों जैसे रोजगार, महँगाई, सामाजिक सुरक्षा और महिला-संबंधी कानूनों का प्रभाव अधिक देखा जाता है, जबकि विधानसभा चुनावों में स्थानीय विकास, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा और कानून-व्यवस्था जैसे विषय महिला मतदाताओं की प्राथमिकताओं में प्रमुख रहते हैं। [17]

महिला मतदाता व्यवहार के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि महिलाएँ उन दलों और उम्मीदवारों को अधिक समर्थन देती हैं, जो उनके दैनिक जीवन से जुड़े मुद्दों को प्राथमिकता देते हैं। बिहार में स्वयं सहायता समूहों, जीविका परियोजना, छात्रवृत्ति योजनाओं, पोषण, स्वास्थ्य सेवाओं और शराबबंदी जैसी नीतियों ने महिला मतदाताओं को विशेष रूप से प्रभावित किया है। इन योजनाओं से महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक सम्मान की भावना बढ़ी है, जिसका सीधा प्रभाव उनके मतदान निर्णयों पर पड़ा है। [18]

इसके अतिरिक्त, महिला मतदाताओं का वोटिंग व्यवहार अब केवल परिवार या समुदाय के पुरुष सदस्यों के निर्णय पर आधारित नहीं रहा। शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाएँ राजनीतिक चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी करने लगी हैं। मीडिया, सोशल मीडिया और राजनीतिक अभियानों ने महिलाओं को सूचना-संपन्न बनाया है, जिससे वे उम्मीदवारों की छवि, कार्य-प्रदर्शन और घोषणापत्र के आधार पर निर्णय लेने लगी हैं।

महिला मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी का चुनावी परिणामों पर भी स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। कई निर्वाचन क्षेत्रों में महिलाओं का संगठित मतदान किसी भी दल की जीत या हार का निर्णायक कारक बन चुका है। राजनीतिक दल भी इस तथ्य को समझते हुए अपने चुनावी घोषणापत्रों में महिला-केंद्रित योजनाओं को प्रमुखता देने लगे हैं। [19]

महिला मतदाताओं का प्रभाव

महिला मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी ने बिहार की राजनीतिक रणनीतियों को बुनियादी रूप से बदल दिया है। कई पार्टियाँ अब महिला केन्द्रित नीतियों को अपने घोषणापत्र का प्रमुख हिस्सा बनाती हैं, क्योंकि महिलाएँ अब निर्णायक वोट बैंक बन चुकी हैं। 2025 के चुनाव में महिलाएँ कई क्षेत्रों में पुरुषों की अपेक्षा अधिक मतदान कर मतदान प्रतिशत को रिकॉर्ड स्तर तक ले गईं, जिसने चुनावी परिणामों को भी प्रभावित किया। [20]

इसके अलावा, राजनीतिक दलों ने महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोज़गार पर अधिक ज़ोर देना शुरू किया है ताकि महिला मतदाताओं को बेहतर प्रतिनिधित्व मिल सके। यह बदलाव बिहार की राजनीतिक संस्कृति में लिंग-आधारित प्रतिस्पर्धा को भी बढ़ावा दे रहा है।

नीतिगत और सामाजिक चुनौतियाँ

प्रतिनिधित्व में असंतुलन जबकि महिला मतदाताओं की भागीदारी बहुत अधिक है, विधान सभा और लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व अभी भी कम है। 2025 के विधानसभा चुनावों में केवल लगभग 11-12% प्रतिनिधि महिलाएँ थीं, जो अब भी एक न्यूनतम प्रतिशत है। [21]

शिक्षा एवं सूचना की कमी बिहार में महिला साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में कम है, जिससे राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर सूचित निर्णय लेने में बाधाएँ पैदा हो सकती हैं। यह डिजिटल और राजनीतिक साक्षरता के अभाव से और गंभीर हो जाता है।

पारिवारिक और सामाजिक दबाव परंपराएँ और जातिगत/पारिवारिक प्रथाएँ अब भी महिलाओं के स्वतंत्र मतदान निर्णय को प्रभावित करती हैं। कई ग्रामीण भागों में महिलाएँ अभी भी परिवार के आदेश या सरपरिवार की राय के वोट करती हैं।

सुरक्षा और मतदान सुविधाएँ मतदान केंद्रों तक पहुंच, मतदान करने की सुविधाएँ और विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में महिला-अनुकूल मतदान इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी जैसे मुद्दे चुनावी भागीदारी को चुनौती देते हैं। [22]

भविष्य की दिशा

भविष्य में बिहार में महिला मतदाताओं की भूमिका और भी निर्णायक होगी। इससे पहले कि राजनीतिक दल किसी भी रणनीति को अपनाएँ, उन्हें महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्राथमिकताओं को गंभीरता से समझना आवश्यक होगा। नीतिगत सुधार, शिक्षा में समानता, स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार, और महिलाओं के खिलाफ हिंसा से सुरक्षा जैसे मुद्दे मतदाताओं के बीच निर्णायक होंगे। इसके अतिरिक्त, महिला नेतृत्व को राजनीतिक उम्मीदवारों और नीति-निर्माण प्रक्रियाओं में और अधिक जगह देना आवश्यक है ताकि मतदान और प्रतिनिधित्व दोनों में संतुलन स्थापित हो सके।

कुल मिलाकर, बिहार की महिला मतदाता न केवल लोकतंत्र की रीढ़ हैं, बल्कि वे भविष्य की राजनीति, नीति और सामाजिक उन्नति के प्रमुख प्रेरक शक्ति बनते जा रहे हैं।

निष्कर्ष

लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में बिहार की महिला मतदाताओं की भागीदारी ने भारतीय लोकतंत्र को एक नई दिशा प्रदान की है। ऐतिहासिक रूप से सामाजिक-आर्थिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक कारणों से महिलाओं की

राजनीतिक भागीदारी सीमित रही, किंतु हाल के दशकों में बिहार में यह स्थिति तेजी से बदली है। महिला साक्षरता में वृद्धि, स्वयं सहायता समूहों (SHG) का विस्तार, पंचायती राज व्यवस्था में आरक्षण तथा सरकारी कल्याणकारी योजनाओं ने महिलाओं को राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक और सक्रिय बनाया है। परिणामस्वरूप, बिहार के चुनावों में महिला मतदान प्रतिशत कई बार पुरुषों के बराबर या उनसे अधिक रहा है, जो लोकतांत्रिक परिपक्वता का संकेत है। महिला मतदाताओं की प्राथमिकताओं का विश्लेषण यह दर्शाता है कि उनका मतदान व्यवहार केवल पारंपरिक जाति या समुदाय आधारित राजनीति तक सीमित नहीं है। शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, रोजगार, महँगाई, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, स्वच्छता तथा महिला-केंद्रित योजनाएँ उनकी प्रमुख चिंताओं में शामिल हैं। विशेष रूप से लड़कियों की शिक्षा, साइकिल व पोशाक योजना, मातृत्व स्वास्थ्य सेवाएँ, शराबबंदी, तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं ने महिला मतदाताओं के निर्णयों को गहराई से प्रभावित किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएँ "मौन मतदाता" न होकर विवेकपूर्ण और मुद्दा-आधारित मतदान कर रही हैं।

लोकसभा और विधानसभा चुनावों के संदर्भ में यह भी देखा गया है कि राष्ट्रीय मुद्दों और राज्य स्तरीय मुद्दों के बीच महिला मतदाताओं की प्राथमिकताओं में अंतर होता है। लोकसभा चुनावों में वे राष्ट्रीय नेतृत्व, देश की सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता और व्यापक विकास एजेंडे को महत्व देती हैं, जबकि विधानसभा चुनावों में स्थानीय समस्याएँ- जैसे सड़क, बिजली, पानी, स्वास्थ्य केंद्र, विद्यालय और कानून-व्यवस्था अधिक प्रभावी भूमिका निभाती हैं। यह भेद महिला मतदाताओं की राजनीतिक समझ और व्यावहारिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

महिला मतदाताओं के बढ़ते प्रभाव का राजनीतिक दलों की रणनीतियों पर भी स्पष्ट असर पड़ा है। अब चुनावी घोषणापत्रों में महिलाओं के लिए विशेष योजनाएँ, आरक्षण की बातें, सुरक्षा उपाय और आर्थिक सशक्तिकरण से जुड़े वादे प्रमुखता से शामिल किए जाते हैं। कई चुनावों में यह देखा गया है कि महिलाओं का संगठित और उच्च मतदान प्रतिशत चुनाव परिणामों को निर्णायक रूप से प्रभावित करता है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ मुकाबला कड़ा होता है।

निष्कर्षतः बिहार में महिला मतदाताओं की भागीदारी केवल संख्यात्मक वृद्धि नहीं, बल्कि गुणात्मक परिवर्तन का प्रतीक है। वे लोकतंत्र को अधिक समावेशी, संवेदनशील और जवाबदेह बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। भविष्य में यदि शिक्षा, डिजिटल साक्षरता, राजनीतिक प्रशिक्षण और महिला नेतृत्व को और प्रोत्साहन दिया जाए, तो महिला मतदाता न केवल चुनाव परिणामों को प्रभावित करेंगी, बल्कि नीति-निर्माण और शासन की दिशा तय करने में भी केंद्रीय भूमिका निभाएँगी। इस प्रकार, बिहार की महिला मतदाता भारतीय लोकतंत्र की सशक्त स्तंभ के रूप में उभर रही हैं।

सन्दर्भ-सूची

1. भारतीय निर्वाचन आयोग। (2015), बिहार विधान सभा के आम चुनाव पर सांख्यिकीय रिपोर्ट। नई दिल्ली: निर्वाचन आयोग।
2. भारतीय निर्वाचन आयोग। (2019), लोकसभा के आम चुनाव पर सांख्यिकीय रिपोर्ट। नई दिल्ली: निर्वाचन आयोग।
3. भारतीय निर्वाचन आयोग। (2020), बिहार विधानसभा चुनाव 2020 पर सांख्यिकीय रिपोर्ट। नई दिल्ली: निर्वाचन आयोग।
4. भारत सरकार। (2011), भारत की जनगणना 2011: बिहार राज्य आँकड़े। नई दिल्ली: भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय।
5. भारत सरकार। (2021), भारत में महिलाएँ और पुरुष। नई दिल्ली: सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय।
6. राय, पी. (2011), भारत में महिलाओं की चुनावी भागीदारी। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. कुमार, एस. (2014), बिहार में महिला मतदाता और चुनावी राजनीति। इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 75(2), 345-360।
8. छिब्बर, पी., एवं वर्मा, आर. (2018), विचारधारा और पहचान: भारत की बदलती पार्टी प्रणालियाँ। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. झा, एस. (2016), भारतीय चुनावों में लिंग और मतदान व्यवहार। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 51(5), 62-70।
10. पालशीकर, एस., सूरी, के. सी., एवं यादव, वाई. (2014), भारतीय राज्यों में दल प्रतिस्पर्धा। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. यादव, वाई. (2000), दूसरे लोकतांत्रिक उभार को समझना। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 35(34), 2979-2982।
12. कुमार, ए. (2019), बिहार में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी: प्रवृत्तियाँ और चुनौतियाँ। जर्नल ऑफ सोशल एंड इकोनॉमिक डेवलपमेंट, 21(1), 112-129।
13. बनर्जी, एम. (2017), महिला मतदाता मतदान और भारत में लोकतांत्रिक सुदृढ़ीकरण। एशियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 25(3), 356-372।
14. देशपांडे, आर. (2019), भारत में लोकतंत्र और महिलाओं की भागीदारी। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशंस।
15. राय, एस. एम. (2017), विकास की राजनीतिक अर्थव्यवस्था और लिंग। कैम्ब्रिज: पॉलिटी प्रेस।
16. नेशनल इलेक्शन स्टडी। (2019)। एनईएस चुनावोत्तर सर्वेक्षण रिपोर्ट। नई दिल्ली: सीएसडीएस-लोकनीति।
17. लोकनीति-सीएसडीएस, (2020), बिहार विधानसभा चुनाव 2020: एक चुनावोत्तर विश्लेषण। नई दिल्ली: सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज़।
18. वर्मा, आर., एवं गुप्ता, डी. (2021), बिहार में महिला मतदाता और कल्याणकारी राजनीति। स्टडीज़ इन इंडियन पॉलिटिक्स, 9(2), 189-203।
19. सेन, ए. (1999), विकास के रूप में स्वतंत्रता। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
20. कबीर, एन. (2012), महिला सशक्तिकरण और लोकतांत्रिक भागीदारी। वर्ल्ड डेवलपमेंट, 40(3), 426-440।
21. यूएन वूमेन, (2018), भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्व। नई दिल्ली: यूएन वूमेन इंडिया।
22. योजना आयोग, भारत सरकार। (2013), भारत में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण। नई दिल्ली: भारत सरकार।